# || होड़ ||

होड़ सी लगी है लीक से हटने की,
प्रतिस्पर्धी हो, असाधारण बनने की |
कोई सामान्य नहीं कहलाना चाहता,
हर मन की आकांक्षा, बनना निराला |

सोचता हूँ मैं भी, असामान्य कैसे बनूँ ?
चिन्तता हूँ मैं भी, महान कैसे बनूँ ?
ये न्यारे महानुभाव आते हैं कहाँ से ?
क्या खाते हैं ? मुझसे क्या वे भिन्न करते हैं ?

योग्य उत्तर की खोज में भटका मैं चारों ओर,
जिज्ञासा मनकी समेटे, टटोला मैंने हर छोर |
घूमा मैं नदी-पहाड़-जंगल, लगाकर पूरा जोर,
माँ गंगा ने फिर सुलझाई, उलझे मन की डोर |

ये नस्ल नहीं मंगल से, न ही गुरु और शुक्र से,
न ही उत्पत्ति इनकी, राहु-केतु के पूजन से |
असाधारण क्षमताएँ हैं साधारण जनमानस में,
महानता का तत्त्व छिपा, सुशुप्त प्राणिमात्र में |

समर्पण, निग्रह, अनुराग, नम्रता,
इनसे सिंचित ये श्रेष्ठता का अंश |
संयम, विनय, अनुशासन, निष्ठा,
इनसे पोषित ये प्रभुता का वंश |

अभ्यास, कल्पना, जोश, प्रतिज्ञा,
इससे अभिप्रेरित हैं ये आत्माएं |
संकल्प, धैर्य, त्याग, तपस्या,
इससे उत्प्रेरित हैं ये प्रतिमाएं |

दूसरों की देखासीखी कबतक यूँ भागोगे ?
अंधक चौंध में कब तक यूँ तुम हांफोगे ?
सामान्य तो बन न सके, आधी उम्र कट गयी,
महान कैसे बनोगे, मति तुम्हारी जो सड़ गयी |

औसत तो फांदे नहीं, महत्तम कैसे साधोगे ?
ईर्षा, द्वेष, कटुता से भागीरथी कैसे तारोगे ?
ललकारो स्वयं को! सामान्य बनकर दिखलाओगे,
व्यर्थ चली इस होड़ से, मुक्ति स्वयं को दिलवाओगे |

**समीर खांडेकर**

प्रयागराज, माघ पूर्णिमा, २०१९

कुंभ मेले के जीवंत साक्षात्कार के बाद